



उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)



उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

M.Ed./B.Ed.

Dr. Vidya Bhushan Sharma

M.A. Eng., Phil., Psy., M.B.A, M.Lib,
M.Phil., M.Ed., PhD. Education

Post Graduate Certificate in Research Methodology



उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)



उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

एरिक एरिक्सन
मनो सामाजिक विकास सिद्धांत

Dr. Vidya Bhushan Sharma

M.A. Eng., Phil., Psy., M.B.A, M.Lib,
M.Phil., M.Ed., PhD. Education

Post Graduate Certificate in Research Methodology



एरिक एरिक्सन का जीवन परिचय

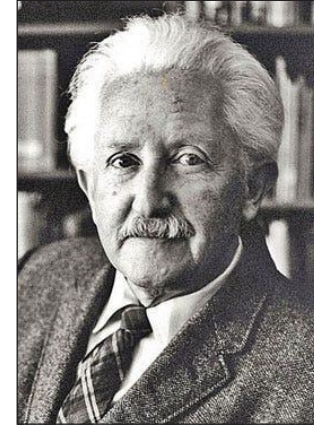
जन्म: 15 जून 1902, फ्रैंकफर्ट, जर्मनी

शिक्षा: एरिक्सन ने अपने प्रारंभिक जीवन में औपचारिक मनोविज्ञान की पढ़ाई नहीं की थी, बल्कि उन्होंने वियना में अन्ना फ्रायड (सिग्मंड फ्रायड की बेटी) के साथ मनोविश्लेषण का अध्ययन किया। अन्ना फ्रायड से प्रेरणा पाकर उन्होंने मनोविज्ञान की दिशा में रुचि दिखाई।

प्रवास: नाजी शासन के दौरान, एरिक्सन को अमेरिका में शरण लेनी पड़ी। उन्होंने अमेरिका में कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया और प्रसिद्ध मनोविज्ञानी बने।

प्रभाव: उनका कार्य केवल मनोविज्ञान तक सीमित नहीं रहा। उनके सिद्धांत का प्रभाव शिक्षा, बाल विकास, समाजशास्त्र और मनोचिकित्सा में भी देखा जा सकता है।

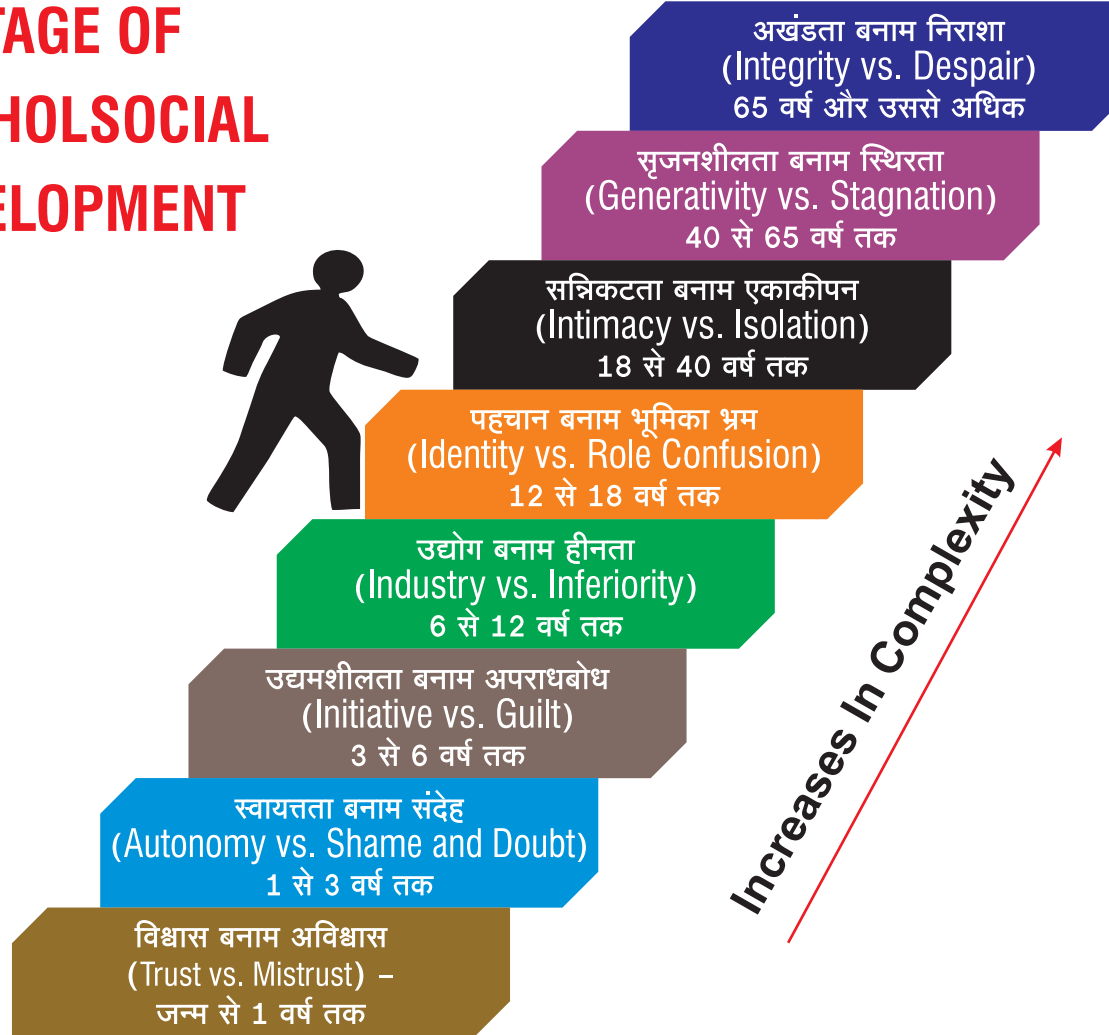
Book : Childhood and Society, The Life Cycle Completed



एरिक एरिक्सन



STAGE OF PSYCHOSOCIAL DEVELOPMENT





1. विश्वास बनाम अविश्वास (Trust vs. Mistrust)

आयु: जन्म से 1 वर्ष तकसंकट का विवरण: इस चरण में शिशु का मुख्य संकट यह है कि क्या वह अपने देखभाल करने वालों पर भरोसा कर सकता है या नहीं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी शारीरिक और भावनात्मक जरूरतें पूरी होती हैं या नहीं।

उद्देश्य: शिशु में भरोसे और सुरक्षा की भावना विकसित करना ताकि वह दुनिया को एक सुरक्षित स्थान मान सके।

सकारात्मक परिणाम: यदि शिशु को समय पर देखभाल, प्यार, और पोषण मिलता है, तो वह दूसरों पर भरोसा करना सीखता है और उसके भीतर आत्मविश्वास विकसित होता है।
नकारात्मक परिणाम: यदि उसकी जरूरतें पूरी नहीं होतीं, तो उसमें अविश्वास की भावना उत्पन्न होती है, जिससे उसके भविष्य के रिश्तों में असुरक्षा पैदा हो सकती है।

उदाहरण:

1. माँ का देखभाल: जब एक शिशु भूखा होता है और तुरंत ही उसे उसकी माँ दूध पिलाती है, तो वह अपनी माँ और दुनिया पर भरोसा करना सीखता है।
2. नींद के दौरान सुरक्षा: यदि शिशु को सोते समय उसकी माँ उसे गले लगाकर लोरी सुनाती है, तो उसे सुरक्षा का अहसास होता है।



3. रौने ढर धुनः ढदऱ शऱशु रूतऱ है ऒर उसकी ढऱँ तुरऱंत उसकऱ धुनऱ रऱखती है, तू वऱह दुनऱडऱ कू ंक ढरूसेढऱंद स्थऱन ढऱनतऱ है।
4. उढेकऱः ंगर शऱशु की देऱखढऱल ठीक से नऱहीं हूती, तू वऱह ढहसूस कर सकतऱ है कऱ उसकी जरूरतूँ कऱ धुनऱ नऱहीं रऱखऱ जऱ रहऱ है, जऱससे वऱह ंवऱशुवऱस वऱकसऱत कर सकतऱ है।

2. स्वऱडतुतऱ ढनऱढ संदेह (Autonomy vs. Shame and Doubt)

ऱडुः 1 से 3 वरूष तकसंकट कऱ वऱवरणः ंस ऒरण ढें ढऱऱऱ खुद से ऒूटे कऱरुड करऱने की कूशऱश करतऱ है, जैसे खुद से ऒलनऱ, खऱनऱ, ंर कढड़े ढहननऱ। ढह ंऱतुढऱऱरुतऱ ंर ंऱतुढऱ-सढुढऱन के वऱकऱस कऱ सढड हूतऱ है।

उदुदेशुडः ढऱऱे ढें ंऱतुढऱ-ऱऱरुतऱ की ढऱवऱनऱ कऱ वऱकऱस करनऱ तऱकऱ वऱह ंढने कऱरुडूँ कू खुद करऱने ढें सऱकऱ ढू ंर खुद ढर वऱशुवऱस कर सके।

सकरऱऱतुढक ढरऱणऱढः ढदऱ ढऱऱे कू स्वतऱंत्र कऱरुड करऱने की ंनुढतऱ दी जऱती है ंर उसकी सरऱहऱनऱ की जऱती है, तू उसढें ंऱतुढऱ-सढुढऱन ंर ंऱतुढऱ-ऱऱरुतऱ की ढऱवऱनऱ वऱकसऱत हूती है।

नकरऱऱतुढक ढरऱणऱढः ंगर ढऱऱे कू उसके ढरुडऱसूँ के लऱे शऱरुढऱदऱ कऱडऱ जऱतऱ है ढऱ उसे रूकऱ जऱतऱ है, तू उसढें संदेह ंर शरुढ की ढऱवऱनऱ उतुढऱन हू सकती है।



उदाहरण:

1. कपड़े पहनना: जब बच्चा खुद से कपड़े पहनने की कोशिश करता है और माता-पिता उसकी सराहना करते हैं, तो उसमें आत्म-सम्मान की भावना बढ़ती है।
2. खुद से खाना: अगर बच्चा खुद से खाना खाने की कोशिश करता है और उसके प्रयासों को सराहा जाता है, तो उसमें आत्म-निर्भरता विकसित होती है।
3. बाथरूम का उपयोग: यदि बच्चा खुद से बाथरूम जाने की कोशिश करता है और उसकी मदद की जाती है, तो वह आत्म-निर्भरता महसूस करता है।
4. शर्मिंदा करना: यदि बच्चे की गलतियों पर उसे डांटा जाता है, तो वह अपने आप में संदेह महसूस कर सकता है और शर्म का अनुभव कर सकता है।

3. उद्यमशीलता बनाम अपराधबोध (Initiative vs. Guilt)

आयु: 3 से 6 वर्ष तकसंकट का विवरण: इस चरण में बच्चा नई गतिविधियों में पहल करता है, जैसे खेल खेलना, कहानियाँ गढ़ना, और रचनात्मक कार्य करना। यह उसकी कल्पनाशक्ति और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है।



उद्देश्य: बच्चे में आत्म-निर्णय और नेतृत्व की भावना विकसित करना ताकि वह नई चीज़ों में पहल करने में सक्षम हो।

सकारात्मक परिणाम: यदि बच्चे को नई चीज़ों में पहल करने की अनुमति दी जाती है, तो उसमें आत्म-विश्वास और रचनात्मकता का विकास होता है।

नकारात्मक परिणाम: अगर बच्चे की पहल को दबा दिया जाता है या उसकी गलतियों पर उसे डांटा जाता है, तो वह अपराधबोध महसूस करने लगता है।

उदाहरण:

1. रोल-प्ले खेलना: एक बच्चा अपने दोस्तों के साथ डॉक्टर-डॉक्टर का खेल खेलता है और अपनी भूमिका को निभाता है, जिससे उसकी कल्पनाशक्ति बढ़ती है।
2. चित्र बनाना: जब बच्चा चित्र बनाता है और उसके माता-पिता उसकी तारीफ करते हैं, तो वह रचनात्मकता का विकास करता है।
3. कहानी सुनाना: बच्चा अपनी काल्पनिक कहानियाँ गढ़ता है और उसे इसके लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो उसमें आत्म-विश्वास का विकास होता है।
4. आलोचना: अगर बच्चे को उसकी पहल के लिए टोक दिया जाता है, तो वह अपराधबोध महसूस कर सकता है, जिससे उसकी आत्म-निर्णय क्षमता पर असर पड़ सकता है।



4. उद्योग बनाम हीनता (Industry vs. Inferiority)

आयु: 6 से 12 वर्ष तक

विवरण: यह स्कूल जाने का समय है, जहाँ बच्चा नई-नई चीज़ें सीखता है और उनमें निपुणता हासिल करने का प्रयास करता है। वह अपने कौशल और क्षमताओं का विकास करना चाहता है।

उद्देश्य: आत्म-सम्मान और उत्पादकता की भावना का विकास करना ताकि बच्चा सीखने और मेहनत करने में गर्व महसूस कर सके।

सकारात्मक परिणाम: यदि बच्चे की मेहनत की सराहना की जाती है और उसे अच्छे परिणाम मिलते हैं, तो उसमें आत्म-सम्मान और सफलता की भावना उत्पन्न होती है।

नकारात्मक परिणाम: अगर उसकी मेहनत को नज़रअंदाज़ किया जाता है या उसे बार-बार असफलता का सामना करना पड़ता है, तो उसमें हीनता की भावना उत्पन्न हो सकती है।

उदाहरण:

1. स्कूल का काम: एक बच्चा जो गणित में अच्छा प्रदर्शन करता है और उसके शिक्षक उसकी तारीफ करते हैं, तो वह अपने कौशल में गर्व महसूस करता है।



2. खेल प्रतियोगिता: यदि बच्चा खेल में भाग लेता है और उसे पुरस्कार मिलता है, तो वह आत्म-सम्मान और सफलता की भावना का अनुभव करता है।
3. कला प्रदर्शन: एक बच्चा जो कला में रुचि रखता है और अपनी कला प्रदर्शनी में अच्छी प्रतिक्रिया पाता है, वह आत्म-सम्मान महसूस करता है।
4. अस्वीकृति का अनुभव: यदि किसी बच्चे को उसकी कमजोरियों के लिए नकार दिया जाता है, तो वह खुद को दूसरों से कमतर महसूस कर सकता है और हीनता की भावना विकसित कर सकता है।

5. पहचान बनाम भूमिका भ्रम (Identity vs. Role Confusion)

उम्र : 12 से 18 वर्ष की आयु के बीच आता है। यह किशोरावस्था का समय है, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य और अपनी पहचान की खोज करता है। इस दौरान किशोर यह समझने का प्रयास करता है कि वह कौन है, समाज में उसकी भूमिका क्या है, और जीवन में उसका उद्देश्य क्या है। यह समय उसके व्यक्तित्व, मूल्यों और विश्वासों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। यदि किशोर को अपनी पहचान और उद्देश्य को समझने में मार्गदर्शन और समर्थन मिलता है, तो वह आत्म-सुरक्षा और स्थिरता की भावना प्राप्त करता है। लेकिन यदि वह अपने उद्देश्य को लेकर असमंजस में रहता है या समाज से उचित समर्थन नहीं मिलता, तो वह पहचान संकट और भूमिका भ्रम का अनुभव कर सकता है।



आयु: 12 से 18 वर्ष तक

संकट का विवरण: इस चरण में किशोर अपनी पहचान, मूल्यों, और समाज में अपनी भूमिका की खोज करता है। वह खुद से प्रश्न करता है, मैं कौन हूँ? और मेरा भविष्य क्या होगा?

उद्देश्य: इस चरण का उद्देश्य किशोर में आत्म-सुरक्षा, आत्म-परिभाषा, और एक स्थिर पहचान की भावना का विकास करना है ताकि वह जीवन में अपने उद्देश्य और मार्ग के बारे में स्पष्टता प्राप्त कर सके।

सकारात्मक परिणाम: यदि किशोर अपने लिए एक स्थिर पहचान बनाता है और अपने मूल्यों को समझता है, तो वह आत्म-सुरक्षा, आत्म-विश्वास, और जीवन में स्थिरता की भावना विकसित करता है।

नकारात्मक परिणाम: यदि किशोर अपनी पहचान और भूमिका को लेकर भ्रमित रहता है या समाज में अपने उद्देश्य को नहीं समझ पाता, तो वह असमंजस, भूमिका भ्रम, और आत्म-संदेह का अनुभव कर सकता है।

सकारात्मक उदाहरण (Positive Examples)

1. **रुचियों और करियर की खोज:** एक किशोर जो अपनी रुचियों को समझता है और उन पर काम करता है, जैसे संगीत, खेल, या विज्ञान में रुचि विकसित करना, उसे अपने जीवन का उद्देश्य समझ में आने लगता है। यदि उसे परिवार और शिक्षकों का समर्थन मिलता है, तो वह अपने करियर के बारे में आत्म-विश्वास और स्पष्टता महसूस करता है।



- 2. मूल्यों और विश्वासों का निर्माण:** एक किशोर जो समाज सेवा में रुचि रखता है और समाज के प्रति जिम्मेदारी महसूस करता है, वह अपने जीवन के उद्देश्य को समझ पाता है। उसे यह एहसास होता है कि उसका जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी मूल्यवान है, जिससे उसकी पहचान मजबूत होती है।
- 3. मित्रता और सामाजिक समूह:** एक किशोर जो अपने दोस्तों के साथ सकारात्मक संबंध बनाता है और जिनके साथ उसके मूल्यों और विचारों में समानता होती है, वह अपनी पहचान को लेकर आत्म-विश्वास महसूस करता है। यह सामाजिक समर्थन उसे आत्म-सुरक्षा और स्थिरता की भावना देता है।
- 4. शैक्षणिक और पेशेवर मार्गदर्शन:** यदि किशोर को करियर काउंसलिंग मिलती है और उसे अपने करियर के विभिन्न विकल्पों के बारे में मार्गदर्शन मिलता है, तो वह अपने भविष्य को लेकर आत्म-विश्वास और प्रेरित महसूस करता है। यह मार्गदर्शन उसे अपने करियर की दिशा में स्पष्टता और आत्म-सुरक्षा की भावना देता है।

नकारात्मक उदाहरण (Negative Examples)

- 1. सामाजिक दबाव और पहचान संकट:** एक किशोर जो अपने साथियों के दबाव में अपनी रुचियों को दबा देता है और उनके अनुसार व्यवहार करता है, वह अपनी असली पहचान को खो सकता है। यह अनुभव उसे भ्रमित और असुरक्षित महसूस करा सकता है, जिससे वह अपने उद्देश्य को समझने में असमर्थ हो सकता है।